प्रस्तावित बंगलुरु सर्वेक्षण पर मेरी टिप्पणियां

-चित्रा सहस्रबुद्धे

13 जनवरी 2024

1. सर्वेक्षण प्रस्ताव का नाम '**Study of Lokavidya Samaj – The Rationale** रखा गया है. इसमें लोकविद्या-समाज की पहचान को लेकर अधिक स्पष्टता की आवश्यकता महसूस होती है. लोकविद्या-समाज परंपरागत समाज नहीं है, यह मात्र ग्रामीण समाज भी नहीं है और न यह जातियों में सीमित समाज है.

2. लोकविद्या-समाज एक ऐसे जीवंत समाज की अवधारणा है, जो लोकविद्या के बल पर जीने वालों के जीवन को बदहाली और तिरस्कृत स्थिति से निकालकर एक खुशहाल और सम्मानपूर्ण जीवन में बदलने की शक्ति का संचय स्थान बनने की संभावना रखता है और इसके लिए आवश्यक ताना-बाना बुनने की क्षमता भी रखता है.

3. हम लोगों ने समाजों की शक्ति का एक आधार लोकविद्या में देखा है और पिछले 20-25 वर्षों से इस ताने-बाने को बुनने के लिए और इन समाजों की एकता को साधने के लिए लोकविद्या दर्शन और लोकविद्या जन आंदोलन के कार्यक्रम गढ़े हैं.

4. ऐसे में सर्वेक्षण का उद्देश्य इन समाजों के ज्ञान और क्षमताओं के संकलन के साथ ही इनके ज्ञान और क्षमताओं की लूट करने वाली नीतियों को उजागर करना भी होना चाहिए.

5. इन समाजों पर परकीय ज्ञान को ज़बरदस्ती थोपने व इसके चलते इनकी बदहाली होने के असंख्य उदाहरण मिलते हैं. औद्योगिक युग में शोषण का एक महत्वपूर्ण आधार 'ज़बरदस्ती थोपे गये श्रम' में रहा. क्या इसी तरह आज लोकविद्या के बल पर जीने वालों के शोषण को व्यवस्थित ढंग से समझने का एक आधार 'ज़बरदस्ती थोपे गए ज्ञान' के रूप में देखना चाहिए?

6. सर्वेक्षण पद्धति में समूह वार्ताओं को शामिल किया जाना चाहिए.